6. 'माता का प्रेम, पिता के प्रेम की अपेक्षा अधिक गहन होता है।' माता के अंचल पाठ के आधार पर विचार कीजिए। **[CBSE SQP March 2023]**

उत्तर:

- *माता से बच्चे का ममत्व का रिश्ता होता है।*
- *भोलानाथ का अपने पिता से अपार स्नेह के बावजूद विपदा आने पर अपनी माँ की गोद में जाकर छिपना।*
- *माँ के आँचल में बच्चा स्वयं को सुरक्षित महसूस करता है।*

[CBSE Marking Scheme SQP March 2023]

व्याख्यात्मक हल : माता का बच्चे से ममत्व का रिश्ता होता है। चाहे वह अपने पिता से कितना ही प्रेम करता हो पर जो आत्मीय सुख उसे माँ की छाया में मिलता है वह पिता से प्राप्त नहीं होता। भोलानाथ का अपने पिता से अपार स्नेह था पर जब उस पर विपदा आई तो उसे जो शांति और प्रेम अपनी माँ की गोद में मिला वह शायद उसे अपने पिता से प्राप्त नहीं हो पाता। अपनी माँ के आँचल में वह स्वयं को सुरक्षित महसूस करता है। यही कारण है कि पिता पुत्र के प्रेम को दर्शाने के बाद भी पाठ का नाम माता का आँचल रखा गया है।

'माता के अँचल' पाठ में भोलानाथ और उसके साथियों द्वारा मूसन तिवारी और खेत में दाना चुगती चिड़ियों के प्रति किया गया व्यवहार कहाँ तक उचित है? तर्क सहित अपने विचार व्यक्त कीजिए।

[CBSE Practice Paper-2 2023]

तर : 'माता का अँचल' पाठ में भोलानाथ और उसके साथियों का मूसन तिवारी को 'बुढ़वा बेईमान माँगे करेला का चोखा' कहकर चिढ़ाते हैं। खेतों में घुसकर चिड़ियों को उड़ाते हैं। विवाह में आई हुई पालकी को देखकर शोर मचाते हैं और दूल्हे को देखकर उसका मजाक बनाते हैं। वैसे तो इस प्रकार के कार्य नैतिक मूल्यों का समर्थन नहीं करते हैं, क्योंकि सामान्य रूप से ये व्यवहार अनुचित हैं, परंतु बच्चों के द्वारा किए गए इस प्रकार के व्यवहार से न तो किसी को कोई दुःख होता है और न ही किसी का कोई नुकसान होता है। वे केवल आनंद प्राप्ति के लिए सहज भाव से ऐसा व्यवहार करते हैं।

[CBSE Marking Scheme Practice Paper-2 2023]

प्रति प्रेम को अभिव्यक्त किया है? [CBSE 2017]

10. 'माता का अँचल' पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई है, वह आपके बचपन की दुनिया से किस तरह भिन्न है?

[CBSE 2016]

उत्तर : इस पाठ में बच्चों की जो दुनिया रची गई है, वह हमारे बचपन की दुनिया से सर्वथा भिन्न है। जहाँ पहले बच्चों का बचपन सहज और सरल होता था, वहीं आज का

बचपन कृत्रिमता से युक्त है। पहले के बच्चों में पढ़ाई के लिए किसी भी प्रकार का दबाव नहीं था। वे दिनभर मस्त होकर खेलते-कूदते रहते थे। घर की अनावश्यक वस्तुएँ उनके खिलौने बन जाते थे। उन्हीं से उनका मन बहल जाता था। शाम को खेतों में जाकर उछल-कूद करते थे।

हमारा बचपन इससे सर्वथा भिन्न है। शहरी माहौल में रहते हुए हम पूरी तरह से शहरी हो गए हैं। प्राकृतिक वातावरण से हम कोसों दूर हैं। आज हमारे खिलौने मोबाइल, टीवी, कंप्यूटर आदि हैं। घर पर ही इन सबसे खेलते हुए हमारा बचपन बीत रहा है। आज का बचपन कहीं ठहर-सा गया है।

... में लेखक के बचपन की

करते है?

30. 'माता का अँचल' पाठ में वर्णित बचपन और आज के बचपन में क्या अन्तर है? क्या इस अन्तर का प्रभाव दोनों बचपनों के जीवन मूल्यों पर पड़ा है ?

[CBSE Term-2 SQP 2022]

उत्तर : 'माता का अँचल' पाठ में भोलानाथ और उसके साथियों के खेल, सामूहिक रूप से मिल–जुलकर खेले जाते थे। उनके खेलने की सामग्री बच्चों द्वारा स्वयं निर्मित की जाती थी। घर की अनुपयोगी वस्तु ही उनके खेल की सामग्री बन जाती थी। उनके खेलने की कोई भी सामग्री बाज़ार निर्मित नहीं होती थी, जबकि आज प्लास्टिक के खिलौने और इलैक्ट्रानिक खिलौनों का प्रचलन है। आज के बच्चे के खिलौने बाज़ार निर्मित होते हैं। खेल सामग्री में आए अंतर ने बच्चों के नैतिक मूल्यों को भी प्रभावित किया है। वर्तमान समय में बच्चों द्वारा जो खेल खेले जाते हैं, उन्होंने बच्चों को एकाकी बना दिया है। उनसे सहयोग, सहभागिता, सामाजिकता जैसे गुण धीरे–धीरे समाप्त होते जा रहे हैं।

[CBSE Marking Scheme Term-2 SQP 2022]